Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.09, August,2025

भारतीय ज्ञान प्रणाली में बौधायन धर्मसूत्रों का सामाजिक चेतना

* **ज्योति मिश्रा**
शोधछात्रा
संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

****

Abstract: *संस्कृत सबसे प्राचीन भाषा मानी गई है और इसमें ही वेद, वेदांग,उपनिषद, दर्शन, पुराण, इत्यादि अनेक ग्रन्थ मिलते है वेदांगो में कल्प के अन्तर्गत धर्मसूत्र का वर्णन मिलता है जिनमें से गौतम, वसिष्ठ, बौधायन, आपस्तम्ब, विष्णु इत्यादि प्रसिद्ध धर्मसूत्र प्राप्त होते है। धर्मसूत्र सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है। बौधायन धर्मसत्र कृष्ण यजुर्वेद का माना जाता है। और यह ग्रन्थ सूत्र शैली में निबंध किया गया है। इसमें सामाजिक वातावरण का मुख्य रूप से वर्णन किया गया है। जैसे सामाजिक व्यवस्था , ,कानून व्यवस्था धार्मिक प्रथायें दण्ड अनेक विषयों पर चर्चा की गई है। भारतीय समाज में ,प्रयश्चित ,श्राद्ध ,आश्रम व्यवस्था , नैतिक और सामाजिक मूल्यों की गहरी समझ प्रदान की गई है। बौधायन धमसूत्र में तीन प्रकार के धर्म का वर्णन किया गया है। वेद स्मृति और शिष्ट उनके आचरण को ,धर्म का स्त्रोत माना जाता है। **उपदिष्टो धर्मः प्रतिवेदम्। स्मार्तो द्वितीयः। तृतीयः शिष्टगमः।**[1] इस शोध सार में सामाजिक जीवन और व्यातिगत कर्तव्यों का वर्णन किया गया है। विभिन्न वर्गों के बीच सम्बन्धों का वर्णन विस्तार से बताया गया है। आश्रम व्यवस्था स्त्रीयों की स्थिति एवं सम्पत्ति के अधिकारों का पूर्ण रूप से वर्णन किया गया है। आधुनिक सामाज में हमें क्या बदलाव देखने को मिला उस पर भी विचार किया गया है।*

Keywords: *शोध बिन्दु में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है धर्मसूत्रों में वर्णित विवाहों के महत्व, बौधायन धर्मसूत्रों में स्त्रियों का जीवन, आश्रम व्यवस्था एवं प्रायश्चित व्रतो का वर्णन।.*

****

विवाह का महत्व

धर्मग्रन्थों में विवाह भी अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित है। विवाह को यज्ञ माना गया हैं एवं गृहस्थ जीवन का मूल आधार भी। मूलता सभी ग्रन्थों के अनुसार आठ प्रकार के ही माने गये है- मनुस्मृति, ब्राह्मण ग्रन्थ, धर्मसूत्रों में।विवाह शब्द का अर्थ है ले जाना, वहन करना। मनु के अनुसार विवाह को धर्म कर्म के अन्तर्गत माना गया है। इनके अनुसार विवाह सन्तान प्राप्ति और धर्म की स्थापना के लिए भी अत्याधिक महत्वपूर्ण है। समाज में विवाह केवल व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं है बालक पारिवारिक और सामाजिक रूप से स्थिर करने वाला संस्कार माना जाता है। इससे वंश परम्परा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संरक्षित होती हैस्त्री एवं पुरुषों मे स्नेह ,,सहयोग कर्तव्य - बोध उत्पन्न होता ह ै। और इससे ही परिवार की भी

[1] बौधायन धर्मसूत्र -1,1-123

उत्पत्ति होती है। और वह निरन्तर चलती रहती है। धार्मिक दृष्टि से विवाह को धर्मशास्त्र में सर्वश्रेष्ठ सोलह संस्कारों में प्रमुख स्थान दिया है। इसे धर्म काम ,अर्थ , का साधन भी माना गया है।गृह्यसूत्रों में बहुत विस्तार से विधि पूर्वक उल्लेख मिलता है।और वैदिक मन्त्रों में पति सहयात्री भी कहा ,साथी ,पत्नी को सहधर्मी सहचर-गया।

सात कदम चलने के बाद पति एवं पत्नी आजीवन सखा बन जाते है। बौधायन धर्मसूत्र में गृहस्थ आश्रम को तृतीय स्थान पर रखा है। यह आश्रम सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। इससे सृष्टि की रचना होती है।गृहस्थ आश्रम ही धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति में सहायक होते हैं इसमें ही मनुष्य विवाह के द्वारा ही परिवार का निर्माण करता है। अनेक अनेक ग्रन्थों में विवाह के प्रकारों में बदलाव देखे गये है। किन्तु बौधायन धर्मसूत्र में आठ प्रकार के विवाह का वर्णन किया गया है।

अष्टौ विवाहा:[2]

बौधायन कार ने आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख किया है ये विवाह श्रेष्ठ एवं हीन दो प्रकार की श्रेणियों में माना गया है। ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, गान्धर्व आसुर, राक्षस, पैशाच इनमें से चार उत्तम प्रकार की श्रेणी में आते है और चार अधम प्रकार की। उन्हें धर्माधर्म की दृष्टि से वर्गकित किया गया है। ब्राह्म, देव, आर्ष, प्राजापत्य-धर्मसम्मत, श्रेष्ठ विवाहों आस के अन्तर्गत आते है। और आसुर, गान्धर्व, राक्षस, पैशाच - निन्दित या अधर्म की और झुकाव रखने वाले विवाह माने गये है।

तेषां चत्वारः पूर्व ब्राह्मणस्य तेष्वपि पूर्वः पूर्वश्रेयान्।[3]

इनमें से प्रथम चार प्रकार के विवाह अच्छे माने जाते हैं। (ब्राह्म, प्राजापत्य, आर्ष, देव) ये विवाह के प्रकार ब्राह्मणों के लिए अत्यधिक उचित बताये गये है।

उत्तरेषामुत्तरोत्तरः पापीमान्

बाद वाले 4 प्रकार के विवाह (गान्वर्व, आसुर, राक्षस, पैशाच) ये बरं अन्य वर्षों के लिए अनुकूल माने गये है और ये प्रत्येक प्रकार के विवाह अपने से बाद बालर के लिए अच्छे नहीं भाने गये है।

बौधायन धर्मसूत्र के अनुसार स्त्री की स्थिति और भूमिका

स्त्री को परिवार समाज में, माता, पत्नी और गृहलक्ष्मी के रूप में महत्वपूर्ण माना गया है स्त्री का जीवन धर्मसूत्र के अनुसार पति के साथ जुड़ा हुआ माना गया है उसे पति के व्रत और उनके आदेश का पालन करना चाहिए।

न स्त्री स्वातन्त्र्यं विदन्ते।[4]

पति के इहत स्त्री को स्वतन्त्र अधिकार नहीं है। धर्मसूत्र के अनुसार में यह विचार है स्त्री कुछ होती। वह सदैव सहकार्य, पति-सेवा, कुलधर्म का पालन और सन्तान पालन में निष्ठावान रहे।

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।

[2] बौधायन धर्मसूत्र - नरेन्द्र कुमार पृष्ठ संख्या -97
[3] बौधायन धर्मसूत्र -99
[4] बौ०-तृतीय खण्ड,-45

पुत्रस्तु स्थाविरे भावे न, स्त्री स्वातनत्र्यमर्हति ॥[5]

निम्नलिखित पद्म में यह बताया गया है कि कन्या के जन्म के पश्चात् कुमार्यवस्था में पिता रक्षा करता है विवाह के बाद पति रक्षा करता है वृद्धावस्था में पुत्र रक्षा करता है। स्त्री कभी स्वतन्त्र नहीं होती। उस समय विधवा स्त्रीयों का जीवन भी अत्यन्त कठिन था

आश्रम व्यवस्था

मनुष्यों की आयु मुख्यता वर्ष 100की मानी गयी है। और इन सौ वर्षो को चार भागों में विभक्त किया गया है ये चार भाग चार आश्रमों से विभक्त किया गया है प्राचीन ऋषि मुनियों के द्वारा प्रत्येक आश्रम के लिये वर्ष 25 निर्धारित किया गया था ये चार भाग चार आश्रमों के पुरुषार्थ माने गये है। इन चार अश्रमो को सूचारु रूप से पालन करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। चार आश्रमों के नाम कुछ इस प्रकार है। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम,सन्यास आश्रम। सर्वप्रथम आश्रम में प्रवेश से पहले बालक का उपनयन संस्कार होता है। उसके बाद ही गुरुकुल में में प्रवेश प्राप्त होता है। गुरुकुल में बालको का सादा एवं नियमपूर्वक जीवन व्यातीत होता है।

यह प्रक्रिया निशुल्क रुप से चलती थी। बह्मचर्य आश्रम के बाद गृहस्थ आश्रम में प्रवेश होता था। समावर्तन संस्कार के बाद ही गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया जाता था। जब गृहस्थ अवस्था पूर्ण होने के बाद संन्यास आश्रम का प्रवेश होता हैं मुख्यता ऐसा मान सकते हैं कि भोग विलास से एवं सान्सारिक कर्तव्यों को पूर्ण हो जाने पर फिर से वहीं सात्विक जीवन में चले जाना।

इसका उद्देश्य पारलौकिक जीवन में सुधार लाना बताया गया है हमारे जितने भी किये हुए कार्य थे उनको सम्पूर्ण रूप से त्याग करके आगे बढ़ जाना। सम्पूर्ण कामनाओं में विरक्ति। सभी आश्रम का अपना अपना एक महत्त्व है। और उसको सुचारु रूप से चलाने के लिए आश्रम व्यवस्था को जीवन शैली का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। इनको बनाने का उद्देश्य केवल इतना ही था के मनुष्य का जीवन क्रमबद्ध, शान्त, और धर्मपरायण रहे एवं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों कि प्राप्ति कर सके।

चतुर्थमायुषो भागमुषित्वाऽऽद्यं गुरौ द्विज: ।[6]

द्वितीयमायुषो भागं कृतदारो गृहे वसेत्।।

जो मनुष्य चारों पुरुषार्थों के व्रतो का पालन करता है। आश्रमों में से गृहस्थ ,ब्रह्मचर्य), वानप्रस्थ, संन्यास) जो मनुष्य अपने अपने आश्रम के नियमों और व्रतों का-पालन करता है। और किसी की हिंसा न करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करता है। चारों आश्रमों जीवन के चार चरण के रूप में माने गये हैं। प्रथम चरण में **ज्ञान की प्राप्ति ,** द्वितीय चरण में **संसार एवं परिवार का पालन पोषण** तृतीय चरण में एवं **तपस्या एवं त्याग ,**चतुर्थ चरण में ईश्वर में लीन होकर **मुक्ति** यही मनुष्य की के जीवन शैली का पूर्ण-विकास है। बौधायन धर्मसूत्र में यह स्पष्ट किया गया है। कि आश्रम व्यवस्था को धर्म कर्म और समाज को सुव्यवस्थित करने के लिये बनाया गया था अतः इस

[5] बौ०-तृतीय खण्ड-46

[6] मनुस्मृति- 4.1

व्यवस्था को प्राचीन भारतीय परम्परा में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है।

चतुर्विधा आश्रमः ,"ब्रह्मचारिणो गृहस्थाश्च वानप्रस्थाश्च यतयश्च।[7] "

ब्रह्मचर्य आश्रम ,वानप्रस्थ आश्रम ,गृहस्थ आश्रम , सन्यास आश्रम चार प्रकार के माने गये है। आश्रम ,व्यवस्था प्राचीन काल में केवल इसलिए बनाई गई थी जिससे मनुष्य का जीवन व्यवस्थित हो सके और आयु के हिसाब से बहुत ही अच्छे ढंग से निर्धारित की गई है।

ब्रह्मचर्य आश्रम- जीवन के शुरुआती चरण को ब्रह्मचर्य आश्रम में रखा जाता है बौधायन धर्मसूत्र का सबसे , पहला और अत्यन्त महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। इसमें मनुष्य शिक्षा को नींव रखता है। और जीवन के धर्म कर्म ज्ञान और अनुशासन की शुरुआत करता है। "ब्रह्म (सत्य) कीओर चलना" ब्रह्मचर्य का अर्थ है। इसका पालन करने के लिए संयम, तप ,अनुशासन की अवश्यकता होती है। विद्यार्थी को गुरु के समीप गुरुकुल में निवास करना चाहिए। और उनकी सेवा और ज्ञान को सीख कर , प्रमुख लक्षण है। ब्रहाचारी का धर्म है कि वह प्रतिदिन संध्या वन्दन करें। वेदों का जप और अध्ययन करें। संयम और साधना के मार्ग पर चले।

गृहस्थ आश्रम- ब्रह्मचारी गृहस्थो भिक्षुर्वैखानसः वेदाध्ययन के बाद गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर सकता है।मानव जीवन का दूसरा महत्वपूर्ण स्थान है गृहस्थ आश्रम जिसमें सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करता है गृहस्थ आश्रम में तीन पुरुषार्थ ,धर्म) के बारे में बताया जाता है इसमे मनुष्यों (काम ,अर्थ कर्तव्यों और ,को अपने पारिवारिक जीवन में नियम मर्यादाओं का विशेष रूप से वर्णन मिलता है। बौधायन धर्मसूत्र में सहस्थ आश्रमों को सर्वश्रेष्ठ आश्वम माना जाता है। बाकि आश्रमों के मुकाबले जैसे- ब्रह्मचर्य ,वानप्रस्थ , सन्यास के आधार पर मुख्य माना जाता है।बौधायन धर्मसूत्र में यह बताया गया है कि गृहस्थ को अग्निहोत्र, जप और होम (हवन) करना चाहिएमानुसार बताया गया है।

कृच्छ व्रत- भारतीय धार्मिक परम्परा में व्रतों का अत्याधिक महत्व है और यह महत्व प्राचीन से लेकर आधुनिक जीवन में में विशेष महत्व रखते है। व्रत क्या है- व्रत शब्द संस्कृत से बना है।जिसका अर्थ होता है **धार्मिक संकल्प, नियम।** ऐसा व्यवहार जिसे कुछ समय तक जीवन पर्यन्त निभाया जा सके।

व्रत शब्द की व्युत्पत्तिवृ - (वरणे) धातु क्त प्रत्यय से मिलकर बना है संकल्प या अनुशासन।मनु ने व्रतों के बारे में बताया है कि प्रायश्चित के लिए अश्वमेध, स्वार्जित यज्ञ, गोविन्द यज्ञ, एवं अभिजित् इत्यादि यज्ञों का विधान बताया गया है। मनुष्य को किसी एक व्रत पर आश्रित नहीं रहना चाहिए बल्कि शास्त्रों में जिस व्रतों का वर्णन है वे सभी करने चाहिए।

यजेत वैश्वानर स्वार्जित गोविन्द वा।

[7]बौ० धर्म० 2.6.11

अभिजिद्-विश्वजिद्भ्यां वा त्रिवेन्द्रम वा।।[8]

कृच्छ व्रत एक प्रयाश्चित नामक व्रत है प्राचीन समय में पापों के प्रायश्चित के रूप प्रयोग में लाया गया था इससे मन की, आत्मा की शुद्धि तपस्या के रूप माना जाता है। यह व्रत सबसे कठिन व्रतों के रूप में गिना जाता है। इनके अनेक प्रकार अलग अलग ग्रन्थों में पाये जाते है बौधायन-प्रकार के बताये गये है। 7 धर्म सूत्र में ये मुख्यता कृच्छ, अतिकृच्छ, कृच्छातिकृच्छ, तप्तकृच्छ, सान्तपन कृच्छ, पराक कृच्छ, और महासान्तपन कृच्छ। सामान्यतया सभी व्रतों के करने की विधि अलग अलग प्रकार से दी गई है।

आधुनिक जीवन में बौधायन धर्मसूत्रों की प्रासंगिकता

आज के वर्तमान युग में भले ही शास्त्रों के रूप में धर्मसूत्रों का पालन नहीं होता लेकिन मूल भाव रूप में आज भी उसकी प्रासंगिकता है। शिक्षा और ब्रह्मचर्य के क्षेत्र में आज भी छात्रों में अनुशासन संयम और नियमित अध्ययन को महत्व दिया जाता है। गृहस्थ आश्रम की अवधारण आज भी परिवार और विवाह के रूप में जीवित है। सामाजिक जिम्मेदारिया जैसे - प्रायश्चित और दण्ड व्यवस्था की जगह वर्तमान में कानून और संविधान ने ले लिया लेकिन मूल उद्देश्य वहीं है। परिवार में अपराध को रोकना एवं संतुलन बनाये रखना। उपवास, संयम औरना योग जैसी परम्परायें, आज भी स्वास्थ एवं आध्यात्मिकता के लिए प्रचलित है। स्त्री जीवन में अत्याधक सुधार हुए है जो की तब नहीं था।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति-डॉ.कपिल देव द्विवेदी
2. वैदिक साहित्य का इतिहास - एम विन्टरनिट्ज
3. धर्मसूत्र का इतिहास-पीo वीo काणे, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1992
4. वैदिक साहित्य का इतिहास - बलदेव उपाध्याय
5. पारस्कर गृह्यसूत्र - डॉ सुधाकर मालवीय चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
6. बौधायन धर्मसूत्र - डॉ उमेशचन्द्र पाण्डेय,चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी, 2017
7. बौधायन धर्मसूत्र - डॉ नरेन्द्र कुमार आचार्य, विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली - 110094
8. गौतम धर्मसूत्र - डॉ उमेशचन्द्र पाण्डेय चौखम्भा प्रकाशन, वराणसी
9. मनुस्मृति - पंडित गिरिराज प्रसाद द्विवेदी
10. अमरकोश 2.9.18
11. निरुक्त- समुच्चयः -युधिष्ठिर मीमांसाक
12. भारतीय संस्कृति और नारी - सत्यव्र शास्त्री

*Corresponding Author: Jyoti Mishra
E-mail: jyotimishra.6031@gmail.com
Received: 04 August,2025; Accepted: 20 September,2025. Available online: 28 September, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License

[8]मनुस्मृति 11/74